International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(3): 112-114

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(3): 112-114
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-03-2019
Accepted: 03-04-2019

डॉ. मिथिलेश पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
के.ए. (पी.जी.) कालेज, कासगंज,
उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. मिथिलेश पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
के.ए. (पी.जी.) कालेज, कासगंज,
उत्तर प्रदेश, भारत

अप्रस्तुत–काव्ययोजना के धनी महाकवि कालिदास

डॉ. मिथिलेश पाण्डेय

प्रस्तावना

अपनी कृतियों के काव्य–सौन्दर्य को उत्कर्ष प्रदान करने के लिए प्रकृति के अनन्य उपासक कालिदास ने उसके निःसीम भण्डार से जाज्वल्यमान रत्नों का चयन करके उनकी अप्रस्तुत रूप में योजना की है। कालिदास के अनुसार दृश्य प्रकृति में जो सुषमा बिखरी हुई है, मानवीय लावण्य भी उसी का अङ्ग है। उन्हें भली–भाँति विदित है कि स्त्रियों और पुरुषों (विशेषतः स्त्रियों) में रूप एवम् आकृति की जो आभा झलकती है, वह वस्तुतः सौन्दर्य का अंश है, जो प्रकृति की अपनी अनुपम निधि है।

यही कारण है कि अपने पात्रों एवम् उनकी स्थितियों का परिचय देते हुए रूप, गुण, क्रिया, प्रभाव आदि की सुमुधर अभिव्यक्ति के लिए प्रकृति रंगस्थली के नानावर्णी सुन्दर चित्रों से सादृश्य स्थापित करके महाकवि कालिदास जी अपने वस्तु–वर्णन को और भी अधिक सुभग बना देते हैं। उन्होंने ऐसा करते समय प्रकृति के स्वतः सम्भाव्य स्वरूपों की भी उपमान के रूप में योजना की है। कहीं–कहीं तो प्रकृति के अनेकानेक सुन्दरतम दृश्यों के आधार पर काल्पनिक स्थितियों का निर्माण करके प्रकृति–प्रांगण से लिए गए उपमानों में नवीनता की उद्भावना भी की है।

सदृश्यमूलक अलंकार ही महाकवि कालिदास के प्रयोजन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हो सकते थे और उनके आधार पर ही प्रकृति को समकक्ष रखकर उन्होंने अपने पात्रों के सौन्दर्य, अवस्था, भावना आदि की सशक्त अभिव्यंजना की है। उपमा अलंकार तो कवि का अपना है ही, इसके अतिरिक्त अन्य अलंकारों में रूपक, उत्प्रेक्षा, दृश्टान्त निदर्शना, अर्थान्तरन्यास आदि के प्रयोग में भी उनका अधिकार अपूर्व है। रूपकल्पना में कालिदास ने उस प्रकृति से पूर्ण सहयोग प्राप्त किया है, जिसके सूक्ष्म एवं व्यापक निरीक्षण की उनमें अद्भुत क्षमता थी।

पात्रों के शारीरिक सौन्दर्य की सुमधुर व्यंजना कराने के लिए कवि ने प्रकृति के विभिन्न सुन्दर उपकरणों का आश्रय लिया है। मुख की प्रफुल्लता एवं कान्ति की प्रतीति के लिए चन्द्रमा महाकवि का परम्परासिद्ध उपमान है। रघु के मुखसौन्दर्य के दर्शन को भी महाकवि ने चन्द्रमा के दर्शन जैसा आल्हादकारी वर्णित किया है।[1] नित्यप्रति बढ़ते हुए 'रघु' की तुलना कवि ने सूर्य की किरणों से वृद्धि पाते हुए 'चन्द्रमा' से की है।[2] क्रमशः शक्ति का चयन करते हुए 'रघु' के पौरुष की सम्यक् व्यंजना के निमित्त उन्होंने साँड़ एवं गजराज को उपमान बनाया है–

> महोक्षतां वत्सतरः स्पृषन्निव द्विपेन्द्रभावं कलभः श्रयन्निव।
> रघु क्रमाद्यौवनभिन्नषैषवः पुपोष गाम्भीर्यमनोहरं वपुः।।[3]

अर्थात्, जिस प्रकार बछड़ा 'साँड़' बनने लगता है और करिशावक 'गजराज' होने लगता है, उसी प्रकार शैशवावस्था व्यतीत करके रघु ने जब क्रमशः युवावस्था में चरण रखा, तो उनका शरीर भी गम्भीरता से सुन्दर लगने लगा।

ज्ञातव्य है कि नारी–सौन्दर्य–चित्रण महाकवि कालिदास का विशिष्ट क्षेत्र है और इस क्षेत्र में उन्होंने प्रकृति के एक से एक सुन्दरतम उपकरणों से अपनी नायिकाओं के सौन्दर्य का सामंजस्य दिखाया है, क्योंकि कालिदास की दृश्टि में मानवीय सौन्दर्य का मापदण्ड केवल प्रकृतिक–सौन्दर्य ही हैं

तेजस्विनी बालिका पार्वती को अपने अंक में धारण करने वाली मेनका उसी प्रकार सुशोभित होती है जैसे मेघगर्जन से उद्भूत होने वाले विदूर पर्वतों के रत्नांकुरों से वहाँ की भूमि सुशोभित हो जाती है।[4] क्रमशः वयस्क होती हुई पार्वती नित्यप्रति बढ़ती हुई चन्द्रकला के समान बड़ी होने लगी और जिस प्रकार चन्द्रमा के साथ ज्योत्स्ना–युक्त उसकी कलाएँ बढ़ा करती हैं, उसी प्रकार उनके सुन्दर अंग वृद्धि पाने लगे।[5]

काव्यशास्त्रियों ने मुस्कान का रंग 'श्वेत' माना है और ओठों के लिए प्रायः पल्लव को उपमान के रूप में प्रयोग किया जाता है। पार्वती की 'स्मित' का अत्यन्त हृदयहारी चित्रण कवि ने रूपकातिशयोक्ति के द्वारा इसी आधार पर किया है–

पुष्पं प्रवालोपहितं यदि स्यान्मुक्ताफलं वा स्फुटविद्रुमस्थम्।
ततोऽनुकुर्याद्विषदस्य तस्यास्ताम्रौष्ठपर्यस्तरुचः स्मितस्य।।[6]

अर्थात्, यदि लाल किसलयों के मध्य कोई श्वेतपुष्प हो, अथवा स्वच्छ मूँगों के बीच कोई मोती जड़ा हुआ हो, तब कहीं उस पार्वती के लाल ओठों पर फैली हुई कान्तिवाली 'स्मित' (मुस्कान) का अनुकरण हो सकेगा।

अप्रस्तुत रूप में समायोजित इन प्रकृतिचित्रों का सौन्दर्य 'प्रस्तुत' के सौन्दर्य में वांछित अभिवृद्धि करता हुआ, हमारे हृदय को अपनी सुषमा से भी प्रभावित कर देता है। इनमें से प्रत्येक प्रकृतिचित्र महाकवि की अभीष्ट पूर्ति में पूर्णतः समर्थ है, किन्तु उतने ही सुन्दर अन्य अनेक दृश्यों की एक साथ योजना प्रकृति से कवि के अत्यन्त अन्तरंग परिचय का द्योतक है।

विवाहोचित श्रृंगार से सज्जित मालविका की शोभा की अभिव्यक्ति कवि ने प्रकृति के एक अत्यन्त रमणीय चित्र के माध्यम से की है–

अनतिलम्बिदुकूलनिवासिनी बहुभिराभरणैः प्रतिभाति मे।
उडुगणैरुदयोन्मुखचन्द्रिका हतहिमैरिव चैत्रविभावरी।।[7]

अर्थात्, एक छोटा सा दुकूल धारण किए हुए, अनेक आभूषणों से सुसज्जित यह मालविका, पाला हट जाने से निकले हुए तारों से युक्त एवम् उदयोन्सुख चन्द्रिका युक्त, चैत्रमास की रात्रि की भाँति सुन्दर प्रतीत हो रही है। यहाँ पाले से मुक्त रात्रि की उपमान के रूप में योजना करके महाकवि ने अत्यन्त सूक्ष्मता से 'मालविका' के बन्दीगृह से मुक्त होने की परिस्थिति की ओर भी संकेत कर दिया है।

प्रसाधनों से युक्त न होते हुए भी सुन्दरी रमणियाँ सुन्दर ही लगती हैं। तपस्या के लिए वल्कलवस्त्र धारण कर लेने पर भी पार्वती की रूप छवि में कोई अन्तर नहीं आया, क्योंकि प्रकृति–जगत् में भी देखा जाता है कि सुन्दर वस्तुएँ सौन्दर्यहीन के सम्पर्क में आने पर अपेक्षाकृत अधिक सुन्दर प्रतीत होने लगती हैं–

यथा प्रसिद्धैर्मधुरं षिरोरुहैर्जटाभिरप्येवमभूत्तदाननम्।
न षटपदश्रेणिभिरेव पंकजं सषैवलासंगमपि प्रकाषते।।[8]

अर्थात्, जिस प्रकार पार्वती का मुख सुन्दर केशों से प्रिय लगता था, उसी प्रकार जटाओं से भी सुन्दर ही लगा, क्योंकि कमल केवल भ्रमरपंक्ति से युक्त होकर ही शोभित नहीं होता, अपितु शैवाल के संग भी सुन्दर ही लगता है। ज्ञातव्य है कि ऐसा ही वर्णन वल्कलवस्त्र–धारिणी शकुन्तला के सन्दर्भ में अभिज्ञान–शाकुन्तलम् में भी आया है–

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं, मलिनमपि हिमांषोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी, किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।[9]

अर्थात्, शैवाल से घिरा हुआ भी कमल सुन्दर ही लगता है, चन्द्रमा का मलिन कलंक भी उसकी शोभा को बढ़ाता ही है। यह सुकुमारी वल्कलों से आवृत्त होने पर भी सुन्दरतर प्रतीत हो रही है, क्योंकि अच्छी लगने वाली आकृतियों के लिए भला कौन सी वस्तु अलंकार नहीं बन जाया करती है? यहाँ पर प्रकृति के सुन्दर उपकरणों से सादृश्य दिखाकर महाकवि ने नायिकाओं के सौन्दर्य की अतिशयता भली–भाँति व्यक्त कर दी है। कभी–कभी नायिका के सौन्दर्य की सूक्ष्म अभिव्यक्ति में सन्देह की दोला में आरूढ़ हुआ सा महाकवि निर्णय नहीं कर पाता कि कौन सा प्रकृति–पदार्थ इस कार्य के लिए उपयुक्त हो सकता है? उर्वशी के सौन्दर्य का साक्षात्कार पुरुरवा को अनेक तर्कों में उलझा देता है–

अस्याः सर्गविधौ प्रजापतिरभूच्चन्द्रो नु कान्तिप्रदः।
श्रृंगारैकरसः स्वयं नु मदनो मासो नु पुष्पाकरः।।[10]

अर्थात्, क्या इसकी सृष्टि के लिए कान्तिशाली चन्द्रमा को, स्वयं श्रृंगाररस के देवता कामदेव को, अथवा पुष्पों के भण्डार मधुमास को स्रष्टा बनाया गया था। यहाँ पर चन्द्रमा, कामदेव एवं मधुमास को उर्वशी का स्रष्टा मानकर महाकवि ने उसकी चंद्रमा जैसी कान्ति, श्रृगांर के लालित्य एवं पुष्पों की सी सुकुमारता को अभिव्यंजित कर दिया है। इसी प्रकार शकुन्तला के अछूते सौन्दर्य का वर्णन करते समय भी उसने प्रसिद्ध उपमानों को कुछ विशेष परिस्थितियों में ही, उसके समकक्ष स्वीकार किया है–

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहैः।
अनाबिद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्।।[11]

अर्थात्, यह (शकुन्तला) उस फूल के सदृश है, जिसे किसी ने सूँघा न हो, उस किसलय जैसी है, जिसे नखों से छिन्न न किया गया हो, उस रत्न के सदृश है, जो बेधा न गया हो और ऐसे मधु के सदृश है, जो अनास्वादित हो।

यहाँ नायिका के अंग–प्रत्यंग की शोभा का विशद चित्रण करने के साथ ही कवि ने यहाँ उसके व्यक्तित्व की समग्र आभा का अंकन करते हुए उसकी भावनाओं एवम् अवस्था को भी व्यंजित करने वाले संष्लिष्ट प्रकृति–चित्रों की अप्रस्तुत रूप में योजना की है।

क्रान्तद्रष्टा कवि सर्वत्र सौन्दर्य का ही साक्षात्कार करता है। यही कारण है कि दासी के रूप में जीवन व्यतीत करती हुई राजकुमारी मालविका, कतिपय आभूषणों एवम् अपनी विवर्णता के कारण, अग्निमित्र की दृश्टि में पाक को प्राप्त हुई कुन्दलता जैसी प्रतीत हो रही है–

शरकाण्डपाण्डुगण्डस्थलेयमाभाति परिमिताभरणा।
माधवपरिणतपत्रा कतिपयकुसुमेव कुन्दलता।।[12]

अर्थात्, कुछ थोड़े से आभूषण धारण किए हुए एवं सरकण्डे के सदृश पीले गालों वाली, यह मालविका, उस कुन्दलता जैसी प्रतीत हो रही है, जिसके पत्ते बसन्त ऋतु में पक गए हों और जिसमें कुछ गिने–चुने फूल शेष रह गए हों।

विरह–विधुरा यक्षिणी की अपगतश्री मुखछवि की व्यंजना के लिए कवि ने प्रकृति से एक से बढ़कर एक करुण एवं मर्मस्पर्शी चित्रों का चयन किया है। यक्ष से बिछुड़ कर यक्षिणी चकवे से बिछुड़ी हुई चकवी की भाँति एकाकिनी रह गई है। दिन–प्रतिदिन चिन्ता करने के कारण उसकी दशा पाले से हत हुई कमलिनी की भाँति एकदम बदल गई है–

गाढोत्कण्ठां गुरुषु दिवसेष्वेषु गच्छत्सु बालां।
जातां मन्ये षिषिरमथितां पद्मिनीं वान्यरूपाम्।।[13]

अनेक स्थलों पर पात्र की बदलती हुई भावदशा को कवि ने प्राकृतिक चित्रों की सहायता से ज्यों का त्यों अभिव्यंजित कर दिया है। अग्निमित्र के दर्शन की आशा से क्षण भर के लिए खिल उठने वाले एवम् उसे न पाकर दूसरे ही क्षण म्लान हो जाने वाले मालविका के मुख की तुलना, कवि ने प्रातःकालीन एवं सायंकालीन कमल की अवस्था से की है–

सूर्योदये भवति या सूर्यास्तमये च पुण्डरीकस्य।
वदनेन सुवदनायास्ते समवस्थे क्षणादूढे।।[14]

महाकवि कालिदास ने पुत्र के मुख की छवि को देखते हुए आत्मविभोर हो जाने वाले पिता की दशा एवम् उसके उल्लास की जो अभिव्यक्ति की है, वह सर्वथा विलक्षण है–

निवातपद्मस्तमितेन चक्षुषा, नृपस्य कान्तं पिबतः सुताननम्।
महोदधेः पूर इवेन्दुदर्षनाद्, गुरुः प्रहर्षः प्रबभूव नात्मनि।।[15]

अर्थात्, वायु न चलने के कारण निष्कम्प कमल की भाँति शान्त नेत्रों से पुत्र के सुन्दर मुख को पीते हुए–से राजा का अत्यधिक उल्लास उसी प्रकार उमड़ कर उनकी आत्मा में न समा सका, जिस प्रकार चन्द्रमा का दर्शन करने से समुद्र में ज्वार नहीं समाता है। यहाँ उमड़ते हुए उल्लास की व्यंजना कराने के लिए समुद्र के ज्वार से अधिक उपयुक्त और कौन–सा उपमान हो सकता है। इस प्रकार वर्ण्य विषय को प्रकृति के उतने ही सुन्दर दृश्यों से उद्भासित कर देना कालिदास की अपनी विशेषता है और उनकी कृतियों में अनेक स्थलों पर इसके दर्शन होते हैं।

इस प्रकार उक्त वर्णनों में यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि प्रस्तुत एवम् अप्रस्तुत में से कौन सा चित्र सुन्दरतर है। कदाचित् ही कोई ऐसा वर्ण्यविषय होगा, जिसको उत्कर्ष प्रदान करने के लिए, कालिदास के पास बिल्कुल वैसे ही प्रभाव, भाव एवम् अवस्था विशेष से समन्वित प्राकृतिक उपमान न हों। अन्योक्ति एवम् अर्थान्तरन्यास के द्वारा कवि ने प्रकृति के अनेक पदार्थों एवं दृश्यों का आश्रय लेकर अपने पात्रों के पारस्परिक सम्बन्धों एवम् उनकी परिस्थितियों को उद्भासित किया है। दम्पति–युगल के लिए प्रायः उन्होंने प्रकृति से ऐसे ही युग्मों को चुना है, जैसे– नदी और सागर, लता और वृक्ष, चक्रवाकी और चक्रवाक, कुमुद और शशांक, कमल और सूर्य, रोहिणी और शशि इत्यादि।

इस प्रकार प्रकृति की रम्यता में आत्मविभोर महाकवि ने उसके प्रत्येक अंग की सुषमा को इतनी सूक्ष्मता पूर्वक देखा है कि मानवजगत् की प्रत्येक दशा एवं व्यापार के साम्य में वह प्रकृति के अनेक चिरपरिचित एवं हृदयग्राही दृश्य तुरन्त उपस्थापित कर देता है और अप्रस्तुत रूप में समायोजित प्राकृतिक उपकरण एवं दृश्य, अपने सौन्दर्य से चमत्कृत करते हुए वर्ण्य के सौन्दर्य को अधिकतम उत्कर्ष प्रदान करते हैं। यही कारण है कि कालिदास को प्रकृति के सौन्दर्य का सबसे बड़ा पारखी एवं पुजारी कहा जाता है।

सन्दर्भ

1. रघुवंशम् ।। 04.18 ।।
2. रघुवंशम् ।। 03.22 ।।
3. रघुवंशम् ।। 03.32 ।।
4. कुमारसम्भवम् ।। 01.24 ।।
5. कुमारसम्भवम ।। 01.25 ।।
6. कुमारसम्भवम ।। 01.44 ।।
7. मालविकाग्निमित्रम् ।। 05.07 ।।
8. कुमारसम्भवम ।। 05.09 ।।
9. अभिज्ञानशाकुन्तलम् ।। 01.19 ।।
10. विक्रमोर्वशीयम् ।। 01.10 ।।
11. अभिज्ञानशाकुन्तलम् ।। 02.10 ।।
12. मालविकाग्निमित्रम् ।। 03.08 ।।
13. मेघदूतम् ।। 02.23 ।।
14. मालविकाग्निमित्रम् ।। 04.07 ।।
15. रघुवंशम् ।। 03.17 ।